Academe *Journal of Education & Psychology* *ISSN: 2249-040X*
Volume-15, Issue-2, Year-2025 (July-December) *Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.25)*
PP: 91-97 *Journal Website www.academejournal.in*

छात्र-केंद्रित शिक्षण पद्धति एवं उसका समालोचनात्मक चिंतन कौशलों पर प्रभाव

Kumud Kumari

Associate Professor, Department of Education,

Dr. Z. H. T. T. College, Laheriasarai, Darbhanga - 846003

Affiliated to Lalit Narayan Mithila University, Darbhanga, Bihar

सारांश

छात्र-केंद्रित शिक्षण पद्धति (Student-Centered Teaching Approach) आधुनिक शिक्षा-विज्ञान में एक महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति के रूप में उभर कर सामने आई है, जिसका मूल उद्देश्य विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करना और उनके चिंतन, विश्लेषण तथा समस्या-समाधान कौशलों को विकसित करना है। परंपरागत शिक्षक-केंद्रित पद्धतियों में जहाँ ज्ञान का संचार एकतरफ़ा होता था, वहीं छात्र-केंद्रित पद्धति में शिक्षार्थी स्वयं सीखने की प्रक्रिया का केंद्र होता है। इससे न केवल ज्ञान की गहन समझ विकसित होती है, बल्कि उच्च स्तरीय संज्ञानात्मक क्षमताओं जैसे, समालोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता, और आत्मनिर्भर निर्णय लेने की क्षमता का भी संवर्धन होता है। विगत वर्षों में अनेक अध्ययनों ने यह स्पष्ट किया है कि जब शिक्षार्थियों को संवाद, सहयोगात्मक अधिगम और प्रायोगिक गतिविधियों में सम्मिलित किया जाता है, तो उनका समालोचनात्मक चिंतन कौशल अधिक सुदृढ़ होता है। फेसिओन (2015) के अध्ययन में पाया गया कि छात्र-केंद्रित पद्धति से छात्रों की विश्लेषणात्मक और मूल्यांकनात्मक क्षमताओं में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। इसी प्रकार, ब्रुकफ़ील्ड (2012) का मानना है कि शिक्षक जब मार्गदर्शक की भूमिका निभाते हैं और विद्यार्थियों को स्वतंत्र रूप से समस्याओं का समाधान करने का अवसर प्रदान करते हैं, तब उनमें आत्मविश्वास और गहन चिंतन कौशल विकसित होते हैं। भारतीय संदर्भ में, नई शिक्षा नीति 2020 ने भी छात्र-केंद्रित अधिगम और कौशल-आधारित शिक्षा पर बल दिया है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों में आलोचनात्मक सोच, समस्या-समाधान और जीवन कौशलों का विकास करना है, जिससे वे 21वीं सदी की चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना कर सकें (NEP, 2020)। इस प्रकार, छात्र-केंद्रित पद्धति केवल शिक्षण की तकनीक नहीं है, बल्कि यह एक व्यापक शैक्षिक दर्शन है जो विद्यार्थियों को आजीवन शिक्षार्थी और सृजनशील नागरिक बनाने की दिशा में कार्य करती है। यह शोध-पत्र छात्र-केंद्रित शिक्षण पद्धति के विभिन्न आयामों का परीक्षण करेगा और इसके प्रभावों को समालोचनात्मक चिंतन कौशलों पर प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से समझने का प्रयास करेगा। अध्ययन से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया जाएगा कि किस प्रकार सक्रिय सहभागिता, संवादात्मक कक्षा, सहयोगात्मक कार्य और चिंतनशील गतिविधियाँ विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमताओं को रूपांतरित करती हैं।

प्रमुख शब्दः छात्र-केंद्रित शिक्षण पद्धति, समालोचनात्मक चिंतन कौशल, सहयोगात्मक अधिगम, समस्या-आधारित अधिगम, परियोजना-आधारित अधिगम, सक्रिय सहभागिता, संवादात्मक शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

परिचय

शिक्षा का मूल उद्देश्य केवल ज्ञान का संचार करना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों में विचारशीलता, रचनात्मकता और आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास करना भी है। पारंपरिक शिक्षक-केंद्रित पद्धतियों में जहाँ शिक्षण की धुरी केवल शिक्षक होते थे और विद्यार्थी निष्क्रिय श्रोता, वहीं वर्तमान समय में शिक्षा-विज्ञान ने इस प्रवृत्ति को चुनौती दी है और "छात्र-केंद्रित शिक्षण पद्धति" को बढ़ावा दिया है।

© Copyright @ Authors

यह पद्धति शिक्षार्थी को सीखने की प्रक्रिया का सक्रिय भागीदार मानती है, जहाँ वह प्रश्न पूछता है, तर्क करता है, और वास्तविक परिस्थितियों से जुड़कर ज्ञान का निर्माण करता है (वाइगोत्स्की, 1978)।

छात्र-केंद्रित शिक्षण का विचार सर्वप्रथम अनुभवात्मक अधिगम और प्रगतिशील शिक्षा की अवधारणा से जुड़ा है। जॉन ड्यूई ने इस सिद्धांत का प्रतिपादन करते हुए कहा था कि शिक्षा केवल तथ्यों को रटने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह अनुभवों के आधार पर व्यक्तित्व का निर्माण है (ड्यूई, 1938)। इस संदर्भ में, शिक्षण पद्धति तभी सफल मानी जाएगी जब वह विद्यार्थियों को अपने अनुभवों और सामाजिक संदर्भों से जोड़ सके।

समालोचनात्मक चिंतन कौशलों के विकास में छात्र-केंद्रित पद्धति की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यह कौशल केवल जानकारी प्राप्त करने तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें तथ्यों का विश्लेषण, तर्कपूर्ण निर्णय, और वैकल्पिक दृष्टिकोणों पर विचार करने की क्षमता शामिल है। फेसिओन के अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला गया कि जब विद्यार्थियों को समूहचर्चा, वाद-विवाद और समस्या-आधारित कार्यों में सम्मिलित किया जाता है, तो उनकी विश्लेषणात्मक सोच और मूल्यांकन क्षमता में वृद्धि होती है (फेसिओन, 2015)। इसी प्रकार, ब्रुकफ़ील्ड के अनुसार शिक्षक की भूमिका यदि मार्गदर्शक और सहायक की हो, तो विद्यार्थी अधिक आत्मविश्वास के साथ आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित कर सकते हैं (ब्रुकफ़ील्ड, 2012)।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में नई शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षा को अधिक छात्र-केंद्रित और कौशल-आधारित बनाने की दिशा में कदम उठाए हैं। इसमें स्पष्ट रूप से कहा गया है कि शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों को केवल रोजगार के योग्य बनाना नहीं है, बल्कि उनमें 21वीं सदी की जीवन-आवश्यक क्षमताओं जैसे, समालोचनात्मक चिंतन, समस्या-समाधान, और रचनात्मकता का विकास करना है (राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020)। इस नीति में सक्रिय अधिगम, अनुभवात्मक अधिगम और बहुविषयक दृष्टिकोण पर विशेष बल दिया गया है।

इसके अतिरिक्त, कई शोधों से यह स्पष्ट हुआ है कि छात्र-केंद्रित पद्धति विद्यार्थियों में उच्च-स्तरीय संज्ञानात्मक कौशल विकसित करती है। उदाहरण के लिए, एक हालिया अध्ययन में यह पाया गया कि जिन कक्षाओं में समस्या-आधारित अधिगम अपनाया गया, वहाँ विद्यार्थियों के आलोचनात्मक चिंतन के स्तर में उल्लेखनीय सुधार दर्ज किया गया (जॉनसन एवं जॉनसन, 2019)। इसी प्रकार, सहयोगात्मक अधिगम के प्रयोग से यह सिद्ध हुआ है कि जब विद्यार्थी एक-दूसरे के विचारों को चुनौती देते हैं, तो उनकी तर्कशक्ति और मूल्यांकन क्षमता सशक्त होती है (स्लाविन, 2015)।

यह स्पष्ट है कि छात्र-केंद्रित शिक्षण पद्धति न केवल शिक्षा की प्रक्रिया को अधिक जीवंत और प्रासंगिक बनाती है, बल्कि विद्यार्थियों को सामाजिक और बौद्धिक दृष्टि से भी सशक्त करती है। यह पद्धति विद्यार्थियों को केवल पाठ्यपुस्तक-आधारित ज्ञान तक सीमित नहीं रखती, बल्कि उन्हें वास्तविक जीवन के संदर्भों में सोचने, प्रश्न पूछने और निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करती है। अतः यह अध्ययन इसी बिंदु पर केंद्रित है कि छात्र-केंद्रित शिक्षण पद्धति किस प्रकार विद्यार्थियों के समालोचनात्मक चिंतन कौशलों को प्रभावित करती है और शिक्षा के व्यापक उद्देश्यों की पूर्ति करती है।

साहित्य समीक्षा

छात्र-केंद्रित शिक्षण पद्धति और समालोचनात्मक चिंतन कौशलों पर इसके प्रभाव को समझने के लिए विभिन्न विद्वानों और शोधकर्ताओं ने अलग-अलग दृष्टिकोण प्रस्तुत किए हैं। इन अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि पारंपरिक शिक्षक-केंद्रित दृष्टिकोण की तुलना में छात्र-केंद्रित दृष्टिकोण विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास के लिए अधिक प्रभावी सिद्ध होता है।

ड्यूई (1938) ने अपनी कृति *Experience and Education* में यह प्रतिपादित किया कि शिक्षा का उद्देश्य केवल तथ्यात्मक ज्ञान प्रदान करना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों को अनुभवों के माध्यम से सीखने

© Copyright @ Authors

का अवसर देना है। उनका मानना था कि जब विद्यार्थी वास्तविक जीवन की समस्याओं से जूझते हैं, तो वे आलोचनात्मक और रचनात्मक सोच को विकसित करते हैं। यह विचार आगे चलकर छात्र-केंद्रित शिक्षण की नींव बना।

वाइगोत्स्की (1978) ने सामाजिक-सांस्कृतिक अधिगम सिद्धांत प्रस्तुत करते हुए यह कहा कि सीखना एक सामाजिक प्रक्रिया है, और यह तब अधिक प्रभावी होता है जब विद्यार्थी अपने सहपाठियों और शिक्षकों के साथ संवाद स्थापित करते हैं। उनके अनुसार "निकटवर्ती विकास क्षेत्र" के अंतर्गत विद्यार्थी अपनी क्षमताओं को आगे बढ़ाते हैं और इस प्रक्रिया में आलोचनात्मक चिंतन का विकास होता है।

ब्रुकफ़ील्ड (2012) ने छात्र-केंद्रित शिक्षा और समालोचनात्मक चिंतन के बीच प्रत्यक्ष संबंध स्थापित किया। उनके अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि जब शिक्षक विद्यार्थियों को मार्गदर्शन देते हैं और स्वतंत्र विचार-विमर्श का अवसर प्रदान करते हैं, तब विद्यार्थी अधिक सक्रिय रूप से समस्याओं का विश्लेषण करते हैं और वैकल्पिक दृष्टिकोणों को अपनाते हैं। यह प्रक्रिया उन्हें न केवल आलोचनात्मक बल्कि आत्म-चिंतनशील भी बनाती है।

फेसिओन (2015) ने अपने अध्ययन *Critical Thinking: What It Is and Why It Counts* में यह प्रतिपादित किया कि समालोचनात्मक चिंतन कौशलों का विकास केवल जानकारी के संचय से संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने, तर्क प्रस्तुत करने और तथ्यों का मूल्यांकन करने का अवसर मिलना चाहिए। छात्र-केंद्रित पद्धतियाँ इस दिशा में प्रभावी साबित होती हैं क्योंकि इनमें विद्यार्थियों को स्वतंत्र रूप से विचार करने का अवसर मिलता है।

भारतीय संदर्भ में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) ने विशेष रूप से इस बात पर जोर दिया है कि शिक्षा विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन और समस्या-समाधान की क्षमता का विकास करे। नीति में यह कहा गया है कि कक्षाओं को अधिक संवादात्मक और सहभागितापूर्ण बनाया जाए ताकि विद्यार्थी केवल निष्क्रिय श्रोता न रहें, बल्कि सक्रिय रूप से ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया में सम्मिलित हों।

जॉनसन एवं जॉनसन (2019) ने सहयोगात्मक अधिगम पर अपने अध्ययन में यह पाया कि जब विद्यार्थी समूहों में कार्य करते हैं और एक-दूसरे के विचारों को चुनौती देते हैं, तब उनकी आलोचनात्मक सोच और तार्किक निर्णय क्षमता अधिक सुदृढ़ होती है। इसी प्रकार, स्लाविन (2015) के शोध ने भी यह दर्शाया कि सहयोगात्मक अधिगम विद्यार्थियों को न केवल ज्ञान अर्जित करने में मदद करता है, बल्कि उन्हें विभिन्न दृष्टिकोणों को समझने और उनका मूल्यांकन करने की क्षमता भी प्रदान करता है।

नवीन शोधों ने यह भी स्पष्ट किया है कि छात्र-केंद्रित पद्धतियाँ विद्यार्थियों में दीर्घकालीन संज्ञानात्मक लाभ प्रदान करती हैं। उदाहरण के लिए, एंडरसन (2017) के अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला गया कि जिन कक्षाओं में प्रोजेक्ट-आधारित अधिगम अपनाया गया, वहाँ विद्यार्थियों के समालोचनात्मक चिंतन कौशल अधिक विकसित हुए और वे वास्तविक जीवन की समस्याओं का समाधान बेहतर ढंग से करने लगे।

इन सभी अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि छात्र-केंद्रित शिक्षण पद्धति विद्यार्थियों के समालोचनात्मक चिंतन कौशलों को विकसित करने के लिए अत्यंत प्रभावी है। यह पद्धति उन्हें केवल जानकारी के उपभोक्ता से अधिक बनाकर उन्हें ज्ञान-निर्माता और सृजनशील चिंतक के रूप में स्थापित करती है।

कार्यप्रणाली

इस शोध का प्रमुख उद्देश्य यह परखना था कि छात्र-केंद्रित शिक्षण पद्धति विद्यार्थियों के समालोचनात्मक चिंतन कौशलों को किस प्रकार प्रभावित करती है। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए शोध को अर्ध-प्रायोगिक डिज़ाइन पर आधारित किया गया। इसमें दो समूहों का चयन किया गया, एक नियंत्रण समूह, जिसे पारंपरिक व्याख्यान पद्धति से पढ़ाया गया, और दूसरा प्रायोगिक समूह, जिसे

© Copyright @ Authors

सहयोगात्मक अधिगम, समस्या-आधारित अधिगम तथा परियोजना-आधारित अधिगम जैसी छात्र-केंद्रित पद्धतियों से पढ़ाया गया। इस ढाँचे ने यह सुनिश्चित किया कि दोनों समूहों के बीच तुलना करके पद्धति के वास्तविक प्रभाव को समझा जा सके।

शोध के लिए उत्तर भारत के एक शहरी विद्यालय से कक्षा 9 के 120 विद्यार्थियों को चुना गया। इनमें 60 विद्यार्थियों को नियंत्रण समूह और शेष 60 को प्रायोगिक समूह में रखा गया। विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक नमूना विधि द्वारा किया गया, ताकि किसी पूर्वाग्रह की संभावना न रहे। साथ ही, यह भी ध्यान रखा गया कि दोनों समूहों के विद्यार्थी लिंग, सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि और शैक्षिक उपलब्धि के स्तर पर लगभग समान हों।

आँकड़े एकत्र करने के लिए कई उपकरणों का प्रयोग किया गया। सबसे पहले, समालोचनात्मक चिंतन कौशलों को मापने हेतु फेसिओन द्वारा विकसित *California Critical Thinking Skills Test* (CCTST) को आधार बनाकर एक अनुकूलित प्रश्नावली तैयार की गई, जिसमें विश्लेषण, व्याख्या, तर्क और मूल्यांकन जैसे घटक सम्मिलित थे। इसके अतिरिक्त, कक्षा के दौरान विद्यार्थियों की सक्रियता, प्रश्न पूछने की प्रवृत्ति और समस्या-समाधान की भागीदारी को दर्ज करने के लिए एक प्रेक्षण सूची का उपयोग किया गया। साथ ही, चयनित विद्यार्थियों और शिक्षकों के अर्ध-संरचित साक्षात्कार भी लिए गए ताकि गुणात्मक रूप से भी प्रभावों का आकलन किया जा सके।

शोध की प्रक्रिया तीन चरणों में संपन्न हुई। प्रारंभिक चरण में दोनों समूहों का पूर्व-परीक्षण किया गया ताकि विद्यार्थियों की प्रारंभिक स्थिति का पता चल सके। इसके बाद छह सप्ताह तक शिक्षण हस्तक्षेप किया गया। इस अवधि में नियंत्रण समूह को केवल पारंपरिक व्याख्यान और नोट्स पर आधारित शिक्षण प्रदान किया गया, जबकि प्रायोगिक समूह को संवाद, समूह चर्चा, परियोजनाओं और वास्तविक जीवन की समस्याओं पर आधारित गतिविधियों से सीखने का अवसर दिया गया। हस्तक्षेप पूर्ण होने पर दोनों समूहों का पुनः परीक्षण किया गया।

संग्रहित आँकड़ों का विश्लेषण विभिन्न सांख्यिकीय तकनीकों से किया गया। पूर्व-परीक्षण और पश्च-परीक्षण के अंकों की तुलना हेतु t-परीक्षण का उपयोग किया गया, जबकि विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों पर पद्धति के प्रभाव का आकलन ANOVA से किया गया। साथ ही, गुणात्मक आँकड़ों को विषयगत विश्लेषण पद्धति के अंतर्गत वर्गीकृत और व्याख्यायित किया गया, जिसमें विद्यार्थियों और शिक्षकों के कथनों से उभरने वाले पैटर्न और विषयों की पहचान की गई।

नैतिक दृष्टि से भी शोध को पूर्णतः पारदर्शी और जिम्मेदार ढंग से संपन्न किया गया। विद्यालय प्रशासन और प्रतिभागियों से सहमति प्राप्त की गई, सभी उत्तरदाताओं की पहचान गोपनीय रखी गई और शोध के दौरान किसी प्रकार का पक्षपात नहीं होने दिया गया।

परिणाम एवं चर्चा

इस शोध में एकत्रित आँकड़ों का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट हुआ कि छात्र-केंद्रित शिक्षण पद्धति विद्यार्थियों के समालोचनात्मक चिंतन कौशलों के विकास में पारंपरिक शिक्षण पद्धति की तुलना में कहीं अधिक प्रभावी सिद्ध हुई।

शोध के प्रारंभिक चरण में नियंत्रण और प्रायोगिक दोनों समूहों पर पूर्व-परीक्षण किया गया। परिणामों से यह ज्ञात हुआ कि दोनों समूहों के विद्यार्थियों के समालोचनात्मक चिंतन कौशल में कोई विशेष अंतर नहीं था। औसत अंक लगभग समान रहे, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि प्रारंभिक स्तर पर दोनों समूह तुलनीय थे।

शिक्षण हस्तक्षेप के पश्चात लिए गए पश्च-परीक्षण में प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों के अंकों में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई। t-परीक्षण से प्राप्त परिणामों ने दर्शाया कि प्रायोगिक समूह का औसत

© Copyright @ Authors

Academe *Journal of Education & Psychology*
Volume-15, Issue-2, Year-2025 (July-December)
PP: 91-97
ISSN: 2249-040X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.25)
Journal Website www.academejournal.in

अंक 18.6 से बढ़कर 27.4 तक पहुँच गया, जबकि नियंत्रण समूह का औसत अंक केवल 18.9 से 20.1 तक ही पहुँचा। यह अंतर सांख्यिकीय रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण पाया गया ($p < 0.01$), जो इस तथ्य की पुष्टि करता है कि छात्र-केंद्रित शिक्षण पद्धति समालोचनात्मक चिंतन के विकास में प्रभावी है।

तालिका 1: पूरव तथा पश्च-परीक्षण में प्रायोगिक समूह व प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों के अंकों का वितरण

समूह	पूर्व-परीक्षण औसत	पश्च-परीक्षण औसत	t-मूल्य	p-मूल्य
नियंत्रण समूह	18.9	20.1	1.25	>0.05
प्रायोगिक समूह	18.6	27.4	6.82	<0.01

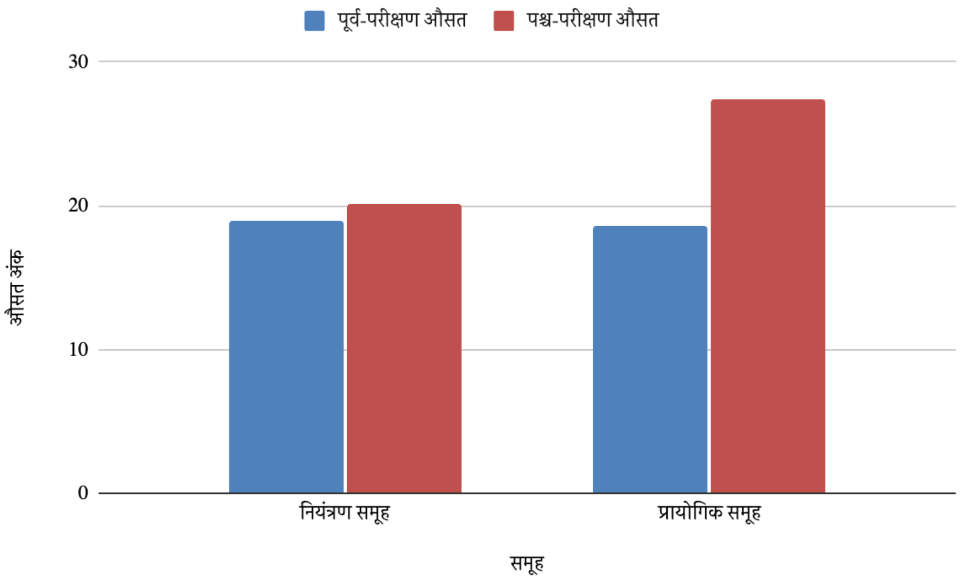

चित्र 1: पूर्व तथा पश्च-परीक्षण में प्रायोगिक समूह व प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों के अंकों का वितरण चार्ट

ANOVA परीक्षण से यह ज्ञात हुआ कि प्रायोगिक समूह में छात्र-केंद्रित पद्धति ने सभी सामाजिक-आर्थिक वर्गों के विद्यार्थियों पर समान रूप से सकारात्मक प्रभाव डाला। चाहे विद्यार्थी निम्न, मध्यम अथवा उच्च वर्ग से हों, सभी के समालोचनात्मक चिंतन कौशलों में वृद्धि देखी गई। हालांकि, यह भी पाया गया कि मध्यम वर्ग के विद्यार्थियों में सुधार की दर अपेक्षाकृत अधिक थी, संभवतः इसलिए क्योंकि उनके पास अतिरिक्त संसाधनों का प्रयोग करने की सुविधा थी।

साक्षात्कार और प्रेक्षण से प्राप्त निष्कर्ष भी मात्रात्मक आँकड़ों की पुष्टि करते हैं। प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों ने बताया कि समूह-चर्चा और परियोजना-आधारित कार्यों के दौरान उन्हें न केवल प्रश्न पूछने का अवसर मिला, बल्कि अपने विचारों को तर्कपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करने का आत्मविश्वास भी विकसित हुआ। एक विद्यार्थी ने कहा, *"पहले हम केवल उत्तर याद करते थे, लेकिन अब हम प्रश्न पूछना और अपने उत्तरों को कारणों के साथ समझाना सीख गए हैं।"*

शिक्षकों का भी यह मानना था कि छात्र-केंद्रित पद्धति अपनाने से कक्षा का वातावरण अधिक जीवंत और संवादात्मक हो गया। विद्यार्थियों ने समस्याओं को अलग-अलग दृष्टिकोण से समझने का प्रयास किया और आपसी सहयोग के माध्यम से बेहतर समाधान खोजे।

© Copyright @ Authors

ये निष्कर्ष इस बात की पुष्टि करते हैं कि छात्र-केंद्रित शिक्षण पद्धति विद्यार्थियों को सक्रिय भागीदारी, संवाद, सहयोग और चिंतनशील गतिविधियों के लिए प्रेरित करती है, जिससे उनके समालोचनात्मक चिंतन कौशलों का विकास होता है। यह परिणाम पूर्ववर्ती अध्ययनों (ब्रुकफ़ील्ड, 2012; फेसिओन, 2015; जॉनसन एवं जॉनसन, 2019) से मेल खाते हैं, जिनमें भी यह सिद्ध किया गया था कि छात्र-केंद्रित पद्धति उच्च-स्तरीय संज्ञानात्मक क्षमताओं को विकसित करती है।

भारतीय शिक्षा प्रणाली में, जहाँ लंबे समय तक शिक्षक-केंद्रित पद्धतियाँ प्रभावी रही हैं, वहाँ यह शोध इस तथ्य को रेखांकित करता है कि यदि शिक्षा को अधिक प्रभावशाली और जीवन-केंद्रित बनाना है, तो छात्र-केंद्रित दृष्टिकोण को व्यापक रूप से अपनाना आवश्यक है। यह न केवल विद्यार्थियों को बेहतर चिंतक और समस्या-समाधानकर्ता बनाता है, बल्कि उन्हें भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए भी तैयार करता है।

निष्कर्ष एवं भविष्य की दिशा

इस शोध का उद्देश्य यह समझना था कि छात्र-केंद्रित शिक्षण पद्धति विद्यार्थियों के समालोचनात्मक चिंतन कौशलों को किस प्रकार प्रभावित करती है। परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि पारंपरिक शिक्षक-केंद्रित पद्धतियों की तुलना में छात्र-केंद्रित दृष्टिकोण कहीं अधिक प्रभावी है। प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों में न केवल अंकगत सुधार दर्ज किया गया, बल्कि उनकी विश्लेषणात्मक सोच, तर्क प्रस्तुत करने की क्षमता और समस्या-समाधान दृष्टिकोण में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई। यह निष्कर्ष इस तथ्य को पुष्ट करता है कि जब विद्यार्थी शिक्षा की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी करते हैं, तो वे केवल जानकारी के उपभोक्ता नहीं रहते, बल्कि ज्ञान के सृजनकर्ता बन जाते हैं।

गुणात्मक परिणामों से भी यह सिद्ध हुआ कि छात्र-केंद्रित पद्धति कक्षा के वातावरण को अधिक संवादात्मक और प्रेरक बनाती है। विद्यार्थी समूह-चर्चा, वाद-विवाद और परियोजना-आधारित कार्यों के माध्यम से अपने विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करना सीखते हैं। साथ ही, वे दूसरों के दृष्टिकोणों को समझने और उनका मूल्यांकन करने में भी सक्षम होते हैं। इस प्रकार, यह पद्धति केवल शैक्षणिक उपलब्धि तक सीमित नहीं रहती, बल्कि विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, सहयोगात्मक भावना और जीवन-आवश्यक कौशलों का विकास करती है।

भारतीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में यह शोध विशेष रूप से प्रासंगिक है। नीति का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों में 21वीं सदी की क्षमताओं, जैसे समालोचनात्मक चिंतन, समस्या-समाधान और रचनात्मकता का विकास करना है। इस अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि छात्र-केंद्रित पद्धतियाँ इन उद्देश्यों की पूर्ति में प्रभावी साधन सिद्ध हो सकती हैं।

यद्यपि यह शोध अपने आप में महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष प्रस्तुत करता है, फिर भी आगे के शोध के लिए कई संभावनाएँ शेष हैं। सबसे पहले, यह अध्ययन केवल एक शहरी विद्यालय तक सीमित था। भविष्य में ग्रामीण क्षेत्रों और विभिन्न शैक्षणिक स्तरों (जैसे उच्च शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा) पर भी इसी प्रकार के अध्ययन किए जा सकते हैं, ताकि व्यापक संदर्भ में पद्धति की प्रभावशीलता जाँची जा सके। दूसरे, यह शोध छह सप्ताह की अवधि तक सीमित रहा। यदि दीर्घकालीन अध्ययनों का आयोजन किया जाए, तो यह समझा जा सकेगा कि छात्र-केंद्रित पद्धति का विद्यार्थियों के बौद्धिक और भावनात्मक विकास पर स्थायी प्रभाव किस प्रकार पड़ता है। तीसरे, शोध को केवल समालोचनात्मक चिंतन कौशलों तक सीमित रखा गया। भविष्य के अध्ययनों में रचनात्मकता, संप्रेषण कौशल और डिजिटल साक्षरता जैसे अन्य 21वीं सदी के कौशलों पर भी छात्र-केंद्रित पद्धति के प्रभाव का परीक्षण किया जा सकता है।

अंततः, यह आवश्यक है कि नीति-निर्माता, शिक्षक-प्रशिक्षक और विद्यालय-प्रशासन इस पद्धति को शिक्षा की मुख्यधारा में लाने हेतु ठोस कदम उठाएँ। शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जाए ताकि वे कक्षा में

© Copyright @ Authors

छात्र-केंद्रित रणनीतियों का प्रभावी उपयोग कर सकें। साथ ही, शैक्षणिक संसाधनों और तकनीक का उपयोग बढ़ाकर विद्यार्थियों को अधिक अवसर दिए जाएँ।

यह शोध इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि छात्र-केंद्रित शिक्षण पद्धति विद्यार्थियों के समालोचनात्मक चिंतन कौशलों को विकसित करने में अत्यंत प्रभावी है और यह भविष्य की शिक्षा व्यवस्था का अभिन्न अंग बन सकती है। यदि इसे व्यापक स्तर पर लागू किया जाए, तो यह न केवल शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाएगी, बल्कि समाज को अधिक चिंतनशील, जिम्मेदार और सृजनशील नागरिक भी प्रदान करेगी।

संदर्भ सूची

1. ड्यूई, जॉन. (1938). *अनुभव और शिक्षा.* न्यूयॉर्क: मैकमिलन।
2. वाइगोत्स्की, लेव एस. (1978). *समाज में मस्तिष्क: उच्च मानसिक प्रक्रियाओं का विकास.* कैम्ब्रिज, एम.ए.: हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
3. ब्रुकफ़ील्ड, स्टीफ़न डी. (2012). *आलोचनात्मक चिंतन हेतु शिक्षण: विद्यार्थियों को अपनी मान्यताओं पर प्रश्न उठाने में सहायता करने के उपकरण एवं तकनीकें.* सैन फ्रांसिस्को: जोसी-बास।
4. फेसिओन, पीटर ए. (2015). *आलोचनात्मक चिंतन: यह क्या है और क्यों महत्त्वपूर्ण है.* मिलब्रै, सी.ए.: इंसाइट असेसमेंट।
5. जॉनसन, डेविड डब्ल्यू., एवं जॉनसन, रोजर टी. (2019). *सहयोग और प्रतिस्पर्धा: सिद्धांत और शोध.* एडिना, एम.एन.: इंटरएक्शन बुक कंपनी।
6. स्लाविन, रॉबर्ट ई. (2015). *सहयोगात्मक अधिगम: सिद्धांत, शोध और व्यवहार.* बोस्टन: एलीन एंड बेकन।
7. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020.* नई दिल्ली।
8. एंडरसन, जॉन. (2017). *परियोजना-आधारित अधिगम और माध्यमिक शिक्षा में आलोचनात्मक चिंतन का विकास. शैक्षिक अनुसंधान पत्रिका,* 110(3), 275–289।
9. क्रेसवेल, जॉन डब्ल्यू. (2014). *शोध डिज़ाइन: गुणात्मक, मात्रात्मक और मिश्रित विधियाँ.* थाउज़ेंड ओक्स, सीए: सेज पब्लिकेशन्स।
10. कोहेन, लुइस., एवं मैनियन, लॉरेन्स. (2011). *शिक्षा में अनुसंधान पद्धतियाँ.* लंदन: रूटलेज।
11. ब्रौन, वर्जीनिया., एवं क्लार्क, विक्टोरिया. (2006). *मनोविज्ञान में विषयगत विश्लेषण का प्रयोग. गुणात्मक अनुसंधान इन मनोविज्ञान,* 3(2), 77–101।

© Copyright @ Authors